राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डॉ. वीणा ठाकुर

स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषय पर चर्चा

संवाददाता | एजुकेशनल न्यूज

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है।

यह बात ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही।

वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है।मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है।

उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मधुर संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्तां के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है।

उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में महती भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रंगलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर बखूबी सामने आया है। तलाक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवर, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला।

उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 1911 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बंगला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं है।

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

राजनीतिक कारणों से हुई उपेक्षा

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है। लेकिन बाद में राजनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है। हमारा सभी रत्न खो गया। हमें उन खोए रत्नों की खोज करनी है। हमें यह सोचना है कि हम हम कौन थे क्या हैं और क्या होंगे अभी ?

सत्र संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डॉ. सुधांशु शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डॉ. के. पी. यादव ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण (जय-जय भैरवी) के साथ हुई। अतिथियों का अंगवस्त्रम, पुष्पगुच्छ एवं पाग से स्वागत किया गया। स्नेहा कुमारी, चंद्रा किरण रीना एवं डॉ. रश्मि कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

तकनीकी सत्र में हुई आलेखों की प्रस्तुति

उद्घाटन समारोह के बाद प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई। प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्षा डॉ. वीणा ठाकुर ने स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली गीत-साहित्य की चर्चा की। डॉ. संजय कुमार मिश्र ने मिथिलाक समवेत दार्शनिक चिन्तन आ स्वतंत्रता आंदोलन पर विचार व्यक्त किया। शिवकुमार मिश्र ने स्वतंत्रता संग्रामक परिपेक्षमे मिथिलाक सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मिथिला महज एक भौगोलिक इकाई नहीं, वरन् एक सांस्कृतिक इकाई है।

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने स्वतंत्रता संग्राम- मैथिली कथा साहित्य विषय पर विचार व्यक्त किया। डॉ. के. पी. यादव ने स्वतंत्रता संग्राममे मधेपुरा आ पूर्णियाक साहित्यिक, सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान और सदानंद यादव ने भारत छोड़ो आन्दोलन आ मैथिली साहित्य ओ समाज विषयक आलेख-पाठ किया।

इस अवसर पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पी. एन. पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अभय कुमार, कै. गौतम कुमार, ले. गुड्डू कुमार, कपिलदेव यादव, डॉ. जावेद अंसारी, डॉ. नरेन्द्र नाथ झा, डॉ. रविन्द्र कुमार चौधरी, सारंग तनय, सौरभ कुमार चौहान, डॉ अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डॉ. सुमंत राव, डॉ मिथिलेश कुमार, मो. नदीम अहमद अंसारी, डॉ. अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, रेशमी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डॉ. स्वर्ण मणि, डॉ. रेणु कुमारी, डॉ. सुशांत कुमार, राज कुमार झा, डॉ. बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे।

दूसरे दिन होगा दो सत्र

दूसरे दिन शनिवार को पू. दस बजे से तृतीय एवं अ. बारह बजे से चतुर्थ तकनीकी सत्र होगा। तृतीय सत्र में सत्राध्यक्ष ताराचंद वियोगी (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली सन्त साहित्य), अजीत मिश्र (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली काव्य साहित्य) एवं डॉ उपेंद्र प्रसाद यादव (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिलीक उपन्यास) का आलेख पाठ होगा। चतुर्थ सत्र में सत्राध्यक्ष डॉ. रामनरेश सिंह (स्वतंत्रता संग्राम आ कोशी परिसर), डॉ. अमोल राय (मैथिली लोक साहित्य आ स्वतंत्रता संग्राम) एवं रवींद्र कुमार चौधरी (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली नाट्य साहित्य) अपने-अपने आलेख प्रस्तुत करेंगे।

दैनिक भास्कर

मधेपुरा 14-05-2022

संगोष्ठी • ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय मधेपुरा और साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया कार्यक्रम

मैथिली साहित्य संस्कृति व दर्शन की स्वतंत्रता संग्राम में विशेष भूमिका

भास्कर न्यूज | मधेपुरा

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। इसे सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही। वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्रामः मैथिली साहित्य-संस्कृति व दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहीं थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मथुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्तां के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है। बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया।

इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

शुक्रवार को अपना विचार व्यक्त करते डॉ. वीणा ठाकुर व मंच पर मौजूद अन्य।

काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से रहा है आगे : डॉ. जगदीश

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है। सत्र संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डॉ. सुधांशु शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डॉ. केपी यादव ने की। मौके पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पीएन पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ.अभय कुमार उपस्थित थे।

दूसरे दिन होगा दो सत्र दूसरे दिन शनिवार को पूर्वाह्न दस बजे से तृतीय एवं अपराह्न बारह बजे से चतुर्थ तकनीकी सत्र होगा। तृतीय सत्र में सत्राध्यक्ष ताराचंद वियोगी (स्वतंत्रता संग्राम व मैथिली सन्त साहित्य), अजीत मिश्र (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिली काव्य साहित्य) एवं डॉ उपेंद्र प्रसाद यादव (स्वतंत्रता संग्राम आ मैथिलीक उपन्यास) का आलेख पाठ होगा।

कैंपस जागरण

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डा. वीणा ठाकुर

ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ, आज होगा समापन

संवाद सूत्र, सिंहेश्वर (मधेपुरा) : साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। यह बात सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डा. वीणा ठाकुर ने कही। वह शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहीं थी। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

उन्होंने कहा कि साहित्य व समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य व मैथिल समाज पर भी लागू होता है। मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है। मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मधुर संस्कृति व दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दासों के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा व जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हो। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है।

बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डा. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। उन्होंने इस संबंध में विशेष रूप से प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल व बंगला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं है। सत्र संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डा. सुधांशु शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डा. केपी यादव ने किया।

टीपी कालेज में कार्यक्रम को संबोधित करतीं डा. वीणा ठाकुर ● जागरण

कार्यक्रम की शुरूआत मंगलाचरण (जय-जय भैरवी) के साथ हुई। अतिथियों का अंगवस्त्रम, पुष्पगुच्छ व पाग से स्वागत किया गया। स्नेहा कुमारी, चंद्र किरण रीना एवं डा. रश्मि कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। उद्घाटन समारोह के बाद प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष डा. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला व मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है, लेकिन बाद में राजनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है। इस अवसर पर सिंडिकेट सदस्य डा. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डा. अमोल राय, प्रधानाचार्य डा. परमानंद यादव, डा. पीएन पीयूष, डा. जवाहर पासवान, डा. अभय कुमार, कै. गौतम कुमार, ले. गुड्डू कुमार, कपिलदेव यादव, डा. जावेद अंसारी, डा. नरेंद्र नाथ झा, डा. रविंद्र कुमार चौधरी, सारंग तनय, सौरभ कुमार चौहान, डा. अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डा. सुमंत राव, डा. मिथिलेश कुमार, मु. नदीम अहमद अंसारी, डा. अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, रेशमी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डा. स्वर्ण मणि, डा. रेणु कुमारी, डा. सुशांत कुमार, राज कुमार झा, डा. बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com

अपने युवा

बीएनएमयू: मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है

संगोष्ठी

- साहित्य व समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं
- स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषय पर चर्चा

1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को दिया धार

टीपी कॉलेज में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में मौजूद विद्वान। • हिन्दुस्तान

मधेपुर, निज प्रतिनिधि। बीएनएमयू के टीपी कॉलेज में साहित्य अकादमी और टीपी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक संगोष्ठी में साहित्यकार प्रो. वीणा ठाकुर ने कहा कि साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। वह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है।

मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मधुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्ता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है। उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में महती भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रंगलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर बखूबी सामने आया है। तलाक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवर, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पीएन पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अभय कुमार, कै. गौतम कुमार, ले. गुड्डू कुमार, कपिलदेव यादव, डॉ. जावेद अंसारी, डॉ. नरेन्द्र नाथ झा, डॉ. रविन्द्र कुमार चौधरी, सारंग तनय, सौरभ कुमार चौहान, डॉ अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डॉ. सुमंत राव, डॉ मिथिलेश कुमार, मो. नदीम अहमद अंसारी, डॉ. अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, रेशमी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डॉ. स्वर्ण मणि, डॉ. रेणु कुमारी, डॉ. सुशांत कुमार, राज कुमार झा, डॉ. बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे। इतिहास की पुस्तक में मैथिली की नहीं मिला सम्यक स्थान: ललितेश टीपी कालेज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 19 11 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बंगला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं है। स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

राजनीतिक कारणों से हुई उपेक्षा: जगदीश: संगोष्ठी में पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला एवं मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है। लेकिन बाद में राजनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है। हमारा सभी रत्न खो गवा। हमें उन खोए रत्नों की खोज करनी है। हमें यह सोचना है कि हम हम कौन थे क्या हैं और क्या होंगे अभी। सत्र संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डॉ. सुधांशु शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डॉ. केपी यादव ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण (जय-जय भैरवी) के साथ हुई। स्नेहा कुमारी, चंद्रा किरण रीना एवं डॉ. रश्मि कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

तकनीकी सत्र में हुई आलेखों की प्रस्तुति

संगोष्ठी क उद्घाटन समारोह के बाद प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई। प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्षा डॉ. वीणा ठाकुर ने स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली गीत-साहित्य की चर्चा की। इस दौरान कई विद्वानों ने अपने विचार रखे। इस दौरान मैथली से जुड़े काफी तथ्यों को बताया गया। डॉ. संजय कुमार मिश्र ने मिथिलाक समवेत दार्शनिक चिन्तन आ स्वतंत्रता आंदोलन पर विचार व्यक्त किया। शिवकुमार मिश्र ने स्वतंत्रता संग्रामक परिपेक्षमे मिथिलाक सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मिथिला महज एक भौगोलिक इकाई नहीं, वरन् एक सांस्कृतिक इकाई है। द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार झा अविचल ने स्वतंत्रता संग्राम- मैथिली कथा साहित्य विषय पर विचार व्यक्त किया। डॉ. केपी यादव ने स्वतंत्रता संग्राममे मधेपुरा आ पूर्णियाक साहित्यिक, सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान और सदानंद यादव ने भारत छोड़ो आन्दोलन आ मैथिली साहित्य ओ समाज विषयक आलेख-पाठ किया।

प्रभात खबर
अखबार नहीं आंदोलन

मैथिली साहित्य, सामान्य जन का है साहित्य: प्रो वीणा

प्रतिनिधि, मधेपुरा

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है बल्कि यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है. साहित्य में समाज निहित होता है. उक्त बातें सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो वीणा ठाकुर ने कही. वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थी. कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय व साहित्य अकादमी नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया. प्रो वीणा ठाकुर ने कहा कि साहित्य व समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं. यह बात मैथिली साहित्य व मैथिल समाज पर भी लागू होता है. मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है. यह समाज से निकट रूप से संबंधित है. उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति व दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं.

हमारा संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रहा शामिल : मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मैथिल संस्कृति व दर्शन मिथिला की अवधारणा से प्रेरित है. इसमें दासता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है. यही कारण है कि हमारे कुछ राजा व जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों, लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है. मिथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में भारी भूमिका निभायी है. साहित्यकार डा ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है,

शिक्षकों व छात्रों को संबोधित करते वक्ता.

मौके पर उपस्थित शिक्षक व अतिथि.

लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया व मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया. इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिये था, वह नहीं मिला.

प्रस्तुत सभी आलेखों को 15 अगस्त तक पुस्तक के रूप में किया जायेगा प्रकाशित : साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के उपसचिव एन सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है. इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को 15 अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा. पूर्व विभागाध्यक्ष डा जगदीश नारायण प्रसाद ने कहा कि प्राचीन काल में मिथिला व मैथिली सब दृष्टि से आगे रहा है, लेकिन बाद में राजनीतिक कारणों से इसकी उपेक्षा हुई है. हमारा सभी रत्न खो गया. हमें उन खोये रत्नों की खोज करनी है. सत्र संचालन उप कुलसचिव अकादमिक डा सुधांशु शेखर व धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डा केपी यादव ने किया.

उद्घाटन समारोह के बाद प्रथम व द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई. प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्षता डा वीणा ठाकुर ने स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली गीत-साहित्य की चर्चा की. डा संजय कुमार मिश्र ने मिथिलाक सामाजिक दार्शनिक चिंतन आ स्वतंत्रता आंदोलन पर विचार व्यक्त किया. शिवकुमार मिश्र ने स्वतंत्रता संग्रामक परिपेक्ष्मे मिथिलाक सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान विषयक आलेख प्रस्तुत किया. द्वितीय सत्र में अध्यक्ष डा अशोक कुमार झा अविचल ने स्वतंत्रता संग्राम-मैथिली कथा साहित्य विषय पर विचार व्यक्त किया. डा केपी यादव ने स्वतंत्रता संग्राम में मधेपुरा आ पूर्णियाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ बौद्धिक योगदान और सदानंद यादव ने भारत छोड़ो आंदोलन आ मैथिली साहित्य ओ समाज विषयक आलेख-पाठ किया. मौके पर सिंडिकेट सदस्य डा रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डा अजय राय, डा परमानंद यादव, डा पीएन पीयूष, डा जवाहर पासवान, डा अभय कुमार, के गौतम कुमार, ले गुड्डु कुमार, कपिलदेव यादव, डा जावेद अंसारी, डा नरेंद्र नाथ झा, डा शैलेंद्र कुमार चौधरी, खगेंद्र तनय, सौरभ कुमार चौहान, डा अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डा सुमन राय, डा मिथिलेश कुमार, मो नदीम अहमद अंसारी, डा अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, रूपा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, श्यामी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डा स्वर्ण मणि, डा रेणु कुमारी, डा सुशील कुमार, राज कुमार झा, डा बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे.

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली व ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा के तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

लोकमत संवाददाता, मधेपुरा ।

साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। यह बात ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही।

वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है।मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली

परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मधुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दासता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है। उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में महती भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रंगलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर बखूबी सामने आया है। उत्तक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवर, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर यथोचित ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 19 11 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बांग्ला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय भेदों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं है स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने बताया कि यह आयोजन आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रस्तुत सभी आलेखों को पंद्रह अगस्त तक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

हम कौन थे क्या हैं और क्या होंगे अभी ?

मंच संचालन उप कुलसचिव (अकादमिक) डॉ. सुधांशु शेखर और धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य डॉ. के. पी. यादव ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण (जय-जय भैरवी) के साथ हुई। अतिथियों का अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं पाग से स्वागत किया गया। स्नेहा कुमारी, चंदा किरण टीना एवं डॉ. शशि कुमारी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

तकनीकी सत्र में हुई आलेखों की प्रस्तुति

उद्घाटन समारोह के बाद प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्र में आलेखों की प्रस्तुति हुई। प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्ष डॉ. वीणा ठाकुर ने स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली गीत-साहित्य की चर्चा की। डॉ. संजय कुमार मिश्र ने मिथिलाक समवेत दार्शनिक चिन्तन आ स्वतंत्रता आंदोलन पर विचार व्यक्त किया। शिवकुमार मिश्र ने स्वतंत्रता संग्रामक परिपेक्ष्य मे मिथिलाक सांस्कृतिक आ बौद्धिक चेतनाक विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मिथिला महज एक भौगोलिक इकाई नहीं, वरन एक सांस्कृतिक इकाई है। इस अवसर पर सिंडिकेट सदस्य डॉ. रामनरेश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अमोल राय, प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद यादव, डॉ. पी. एन. पीयूष, डॉ. जवाहर पासवान, डॉ. अमन कुमार, कै. गौतम कुमार, ले. गुड्डू कुमार, कपिलदेव यादव, डॉ. जावेद अंसारी, डॉ. नरेन्द्र नाथ झा, डॉ. रविन्द्र कुमार चौधरी, सारंग तनय, सौरभ कुमार चौहान, डॉ. अशोक कुमार, गोविंद कुमार, डॉ. सुमंत राव, डॉ मिथिलेश कुमार, मो. नदीम अहमद अंसारी, डॉ. अमिताभ कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार, सुधा कुमारी, ममता कुमारी, रानी, रेशमी कुमारी, सुप्रिया सुमन, अलका कुमारी, डॉ. स्वर्ण मणि, डॉ. ऐनु कुमारी, डॉ. मुकेश कुमार, राज कुमार झा, डॉ. बलबीर कुमार झा आदि उपस्थित थे।

दूसरे दिन शनिवार को पू. दस

राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

मात्र कल्पना नहीं है साहित्य : डॉ. वीणा ठाकुर

स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषय पर चर्चा

मधेपुरा/आरएनएन। साहित्य मात्र कल्पना नहीं है। यह हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज निहित होता है। यह बातें सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ. वीणा ठाकुर ने कही।

वे शुक्रवार को स्वतंत्रता संग्राम : मैथिली साहित्य-संस्कृति ओ दर्शन विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं। कार्यक्रम का आयोजन ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। उन्होंने कहा कि साहित्य एवं समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाज पर भी लागू होता है।मैथिली साहित्य सामान्य जन का साहित्य है। यह समाज से निकट रूप से संबंधित है।

उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य-संस्कृति एवं दर्शन ने स्वतंत्रता-संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यिकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मथुरा संस्कृति एवं दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें दास्तां के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा एवं जिम्मेदारियां अंग्रेजों के साथ रहे हों। लेकिन हमारा संपूर्ण जनमानस संपूर्ण जनमानस अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहा है। उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में महती भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रंगलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के गीतों व भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर बखूबी सामने आया है। तलाक की लोक परंपरा उपन्यास एवं काव्य परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवर, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संदर्भित साहित्य का अभाव नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली साहित्यकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में उपस्थित स्वतंत्रता के स्वर को जैसा स्थान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला।

उन्होंने इस संदर्भ में विशेष रूप से 19 11 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की चर्चा की और बताया कि यह स्वतंत्रता की चेतना के संदर्भ में असमी, तमिल एवं बंगला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है। आधुनिक मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय क्षेत्रों से ओतप्रोत जितनी रचनाएं हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं है।